IJAER/Jan-Feb 2022 /Volume-11/Issue 1 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

एकीकरण के सिद्धांत में अध्यापकों के उत्तरदायित्व एवं भूमिका: एक समीक्षा

शशिपाल सिंह यादव
(पी.एच.डी शोधार्थी)
सनराइज विश्वविद्यालय
अलवर (राजस्थान)

डॉ0 एस. हुसैन
(एसोसिएट प्रोफेसर)
शिक्षा शास्त्र विभाग, सनराइज विश्वविद्यालय
अलवर (राजस्थान)

समावेशी शिक्षा अथवा समावे शन शिक्षा पृथक्करण अथवा अलगाव का विपरीतार्थक शब्द है जिसका अर्थ होता है बाहर रखना , मना करना या निष्कासन करना। समावे शी शिक्षा मे सबको साथ लेकर सम्मिलित करते हुए उनकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए बालको के बौद्धिक, संवे गात्मक एवं सृजनात्मक विकास के अतिरिक्त परस्पर सीखने–सिखाने तथा अभियोजन का एक अनूठा प्रयास है जो कठिन तो है लेकिन असम्भव नही।

समावेशी शिक्षा मे अध्यापक की महत्वपूर्ण भू मिका होती है। मनुष्य द्वारा किसी व्यक्ति को शिक्षित करना सबसे बड़ी सेवा है इसलिये एक अध्यापक एक अच्छे समाज व राष्ट्र का निर्मा ता है। उसी के आधार पर एक राष्ट्र की सफलताओ व ऊँचाइयो को मापा जा सकता है।

एक अध्यापक शैक्षिक प्रणाली मे केन्द्र बिन्दु की भूमिका अदा करता है। एक अध्यापक के बिना विद्यालय या समाज ऐसे है जैसे आत्मा के बिना शरीर, हड्डियों व खून के बिना एक कंकाल, आकृति के बिना छाया।

भारतीय संविधान मे यह प्रावधान है कि 14 वर्ष की आयु तक के छात्रो को निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा प्रदान की जायेगी और संविधान मे प्राथमिक शिक्षा की सार्वभौमिकता और शताब्दी विकास सफलता मे सुधार किया जायेगा परन्तु पिछले तीन वर्षो मे विद्यालयो मे कमी आयी है लगभग तीन करोड़ 50 लाख बच्चे 6 वर्ष की आयु से 19 वर्ष की आयु तक अभी की विद्यालयो मे नही जाते है।

इस आश्चर्य जनक तथ्यों के पीछे मुख्य कारण यह है कि समाज मे रहने वाले सामाजिक रूप से पिछड़े व विशेष अधिकारों वाले व्यक्ति शैक्षिक सुविधाओं से अभी भी वंचित है। इसमे ज्यादातर छात्र विकलांग व अयोग्य है।

समावेशी शिक्षा के माध्यम से अयो ग्य व विकलांग बच्चों के सरकार द्वारा तैयार किये गये क्रिया योजना को पहुँचाने का उत्तरदायित्व अध्यापकों का होता है। अध्यापक शिक्षा के क्षे त्र मे समावेशी शिक्षा को मुख्य स्तंभ माने जाते है। समावेशी शिक्षा कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये यो ग्य व निपुण अध्यापकों की आवश्यकता पड़ती है शिक्षा के अतिरिक्त ये अयो ग्य व विकलांग विद्यार्थियों की यो ग्यता का विकास करके उनके अपनी जिम्मेदारी के प्रति जागरूक कर सकते है। एक शो ध के द्वारा यह सामने आया है कि विकलांग, अयोग्य, मानसिक तौ र पर असंतुलित सुनने मे असक्षम बो लने मे असमर्थ अन्धे व सीखने मे अयोग्य छात्र सहयो गी समूह की तरह रोज दिनचर्या वाली कक्षा मे बैठे । यह उदेश्य केवल विशिष्ट अध्यापकों की मदद से पूरा हो सकता है समावेशी शिक्षा मे अध्यापक योग्य व अयो ग्य छात्रों को इकट्ठा पढ़ाता है । ऐसी शिक्षण प्रणाली में या वातावरण मे स्थायी व अस्थायी अध्यापकों की मदद ली जाती है जो एक ही कक्षा में दो नौ तरह के छात्रों को पढ़ाता है। ऐ सी शिक्षा मे विकलांग छात्रों को जब अन्य छात्रों के साथ पढ़ाया जाता है। तो उनके व्यवहार मे अनुभवों में व बहुऐन्द्रिय उपागमों में परिवर्तन होता है। जैसे–जैसे हमारा समाज जटिल होता जा रहा है एक अध्यापक अपने उत्तरदायित्वों को पूरा करके विकलांग या अयोग्य छात्रों के जीवन में परिवर्तन ला सकता है। अध्यापकों का ज्ञान, प्रशिक्षण व शिक्षण विधियों को अपनाकर उन्हें समाप्त किया जा सकता है। ऐसी शिक्षण पद्धति में आधा दिन बच्चे की समस्याओं को दूर करने के लिये विशिष्ट शिक्षा व आधा दिन आम

कक्षा शिक्षण प्रदान की जाती है। इसमें अध्यापको का उत्तरदायित्व व भूमिकायें अति महत्वपूर्ण है उसे आम बालकों व विशिष्ट बालकां में समन्वय की भावना विकसित करने के लिये कड़ी का कार्य करना पड़ता है।

समावेशी शिक्षा कक्षा शिक्षण का निर्माण ही नहीं करता जिसमें केवल पाठयक्रम शामिल होता है यह विशिष्ट बालकों के व्यवहार भावात्मक व सामाजिक कौशलों को विकसित करने में भी सहायता प्रदान करता है। इसलिये कि वे बालक भी अन्य बालकों के साथ आसानी से बैठकर अच्छे वातावरण में सभ्य समाज का निर्माण कर सकें।

समावेशी शिक्षण में अध्यापक के लिये समन्वय व उचित तालमेल दैनिक स्कूल के छात्रों में व विशिष्ट बालकों में तालमेल का होना अध्यापक की पहली प्रमुखता है। समावेशी कक्षा में छात्रों के प्रति अध्यापको को अधिकार भूमिका व उत्तरदायित्व को ध्यान रखकर सम्बोधन करना पड़ता है। समावेशी कक्षा में अध्यापक को सभी छात्रों का जोरदार स्वागत करना पड़ता है। एक अध्यापक को बिना किसी व्यक्तिगत हित के सभी बच्चों को उनकी क्षमताओ के आधार पर पढ़ाना चाहिये। इसलिये विशिष्ट क्षेत्र या कार्यक्रम में शिक्षण एक मुश्किल कार्य है। अध्यापक को एक समाज द्वारा अभिभावकों द्वारा, निर्देशन तथा अच्छी अधिगम प्रक्रिया के द्वारा अच्छे कौशलो के द्वारा बोलने के कौशल से सामाजिक व्यवहार व जटिल समस्याओं के समाधान के द्वारा व अच्छे व विशिष्ट छात्रों की मदद से अच्छा व प्रभावशील बना सकता है। समावेश शैक्षिक कार्यक्रम अच्छी शिक्षण प्रणाली के माध्यम से कुछ विशिष्ट कार्यक्रमों के द्वारा महत्वपूर्ण ढंग से अयोग्य, अपंग, मानसिक रूप से अयोग्य छात्रों के लिए शुरू की जानी चाहिए।

आज के इस शैक्षिक स्तम्भ के आधार पर अध्यापकों की भूमिका प्रकृति के अनुसार विभाजित होती जा रही है। ऐसी भूमिका को निभाने के लिये अध्यापकों को विशिष्ट ज्ञान, कौशल व अच्छे व्यवहार का ज्ञान होना अति आवश्यक है जो अलग –अलग स्थितियों व अयोग्यताओ को दूर कर सके। कई परिस्थितियों में अध्यापक को ज्ञान होता है परन्तु वे अभिभावकों के साथ समाज व समुदाय के साथ व अपने सह भागियो के साथ समन्वय नही कर पाते है। जिसके कारण ऐसी समस्याए एक समाज मे उनकी अलग–अलग भूमिकाओं को न निभाने के लिये अयोग्य करती है। जिसके कारण छात्र व समाज एक अध्यापक के बहुक्षेत्रों में होने वाली योग्यताओं का लाभ नहीं उठा पाता है। अपंग व अयोग्य बालको की अपनी अलग आवश्यकताओं होती है। इनमे उनकी शैक्षिक, भावात्मक, शारीरिक, मनोवैज्ञानिक समस्याएं व आवश्यकताएं शामिल है। इसलिये विशिष्ट शिक्षा के माध्यम से अध्यापक उनमे से एक है जो उनकी समस्याओं को अपने ढंग से दूर कर सकता है। वह इस तरह का ज्ञान रखता है जिसके माध्यम से वह विशिष्ट शिक्षण उपकरणो व सामग्री के द्वारा अयोग्य बालकों की समस्याओं को विभिन्न तरीकों व स्कूल प्रशासन के द्वारा उनके सहयोगियों के द्वारा अतिरिक्त समय प्रशिक्षण संसाधन व मदद प्रदान करके समाप्त कर सकता है।

समावेशी शिक्षा में एक अध्यापक की भूमिक उत्तरदायित्वों को निम्न आधार पर व्यक्त किया जा सकता है–

1. अध्यापक छात्रों के समझने व यह जानने में योग्य हो कि सभी छात्र एक समान नहीं है।
2. अध्यापक बालकों की बढ़ती योग्यता को विकसित करने में सहायक हों।
3. प्रत्येक छात्र का कक्षा मे स्वागत किया जाय जिससे सभी छात्र अपने आप को एक समान समझे।
4. अध्यापक प्रत्येक छात्र के भावात्मक, सामाजिक, ज्ञानात्मक व शारीरिक कौशलो को विकसित करने के लिए उन्हें समान अवसर प्रदान करें।
5. उसे पाठ्यक्रम इस आधार पर योजनाबद्ध करना चाहियें कि विकलांग छात्रों को प्रभावशाली ढंग से समझाया जा सके।
6. अध्यापक को कक्षा में ऐसे वातावरण का निर्माण करना चाहिये जिससे विकलांग बच्चे अपने कार्यों को पूरा कर

सके व समान अवसर प्रदान करके उन्हे अपने कार्यों को पूरा करने के लिये प्रेरित करना चाहिये।

7. अध्यापक को विकलांग व सामान्य छात्रों में उचित तालमेल स्थापित करने के प्रयास करने चाहिये।
8. अध्यापक को कक्षा में ज्यादा से ज्यादा क्रियायें करने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित करना चाहिये।
9. बच्चों मे आत्मविश्वास व जीवन में मिलने वाले लक्ष्यो व चुनौतियों का सामना करने के लिए उन्हे अध्यापक द्वारा प्रोत्साहित करना चाहिये।
10. छात्रों को ज्यादा से ज्यादा तकनीकी शिक्षा व व्यवसायिक शिक्षा के लिये अच्छे अवसर व संसाधन अध्यापक उपलब्ध करवाये।
11. अध्यापक छात्रों को प्रत्येक कार्य में भाग लेने के लिये प्रेरित करे।
12. अध्यापक समावेशी शिक्षा के माध्यम से अपनी शिक्षण पद्धति का उचित निर्माण करे।
13. अध्यापक को प्रत्येक छात्र को उसकी योग्यता के आधार पर विद्यालय में प्रत्येक सहगामी क्रिया में भाग लेने का उचित अवसर प्रदान करना चाहिए।
14. अध्यापक की यह भूमिका है कि वह कक्षा में समस्याओ को उनके अभिभावकों, शिक्षाविदो व सहयोगी संस्थाओं को समझा सकें।
15. अध्यापक अपंग व विशिष्ट बालकों की समस्याओं को उनके अभिभावकों ,शिक्षाविद्ों व सहयोगी संस्थाओं को समझा सकें।
16. एक अध्यापक के विकलांग बच्चों को ज्यादा से ज्यादा सफलताओ को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
17. अध्यापक को ऐसे छात्रों की आवश्यकताओं व क्षमताओं को जानना चाहिए। जो अपने आप को असक्षम मानते हो।
18. अध्यापक को छात्रों के व्यवहार को ध्यानपूर्वक देखना चाहिए।
19. अध्यापक को ऐसे छात्रों के अभिभावकों को व छात्रों के शैक्षिक कार्यो में मदद करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
20. अध्यापक को ऐसे अन्य शिक्षण संस्थाओ व व्यवसायिक कार्यकर्ताओं से सम्पर्क करना चाहिए जो ऐसे छात्रों को सहयोग देने के इच्छुक हो। ताकि छात्रों के कल्याण के ज्यादा अवसर प्रदान किए जाए।
21. अध्यापक छात्रों को इस योग्य बनाए कि वे अपनी दिनचर्या उन्हीं छात्रों की तरह अपनाए जैसे स्कूल के अन्य छात्र करते हं।
22. अध्यापक को प्रत्येक छात्र तक अपनी बात को पहुंचाने की सक्षमता होनी चाहिए।
23. अध्यापक को प्रत्येक छात्र की इच्छाशक्ति, दृढ़संकल्प व कमियो का ज्ञान होना चाहिए।
24. अध्यापकों को छात्रो को सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
25. उसे सामान्य छात्रों को विकलांग छात्रों के कक्षा में आने का स्वागत करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि समावेशी शिक्षा मे एक अध्यापक अपने छात्रों को मानसिक, शारीरिक, मनोवैज्ञानिक व भावात्मक रूप से मजबूत बनाता है ताकि सभी छात्रों का पूर्ण विकास हो सके। अध्यापक सदैव ही अपने छात्रों के पूर्ण विकास की कल्पना करे उनमें किसी भी प्रकार का भेदभाव न हो तभी वह अपने छात्रों व समाज के साथ न्याय कर पायेगा और अपने देश का मान सम्मान ऊँचा कर सकेगा

सन्दर्भ

1- Allen, K.E. Schowartz, I. - The Exceptional child Inclusion in Early Childhood Education.

2- C. Agrawal, M.K. Narang - Samaveshi Shiksha.

3- A.S. Thakur - Inclusive Education.

4- K. Virk Jaswant, Alka Arora - Fundamentals of Inclusive Education .

5- Madan Mohan Jha - Samaveshi Shiksha

6- Singh - Samaveshi Shiksha

*****